International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

मीनू [1*], डा० दीपा राणा [2]**
शोधार्थी [1*], असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशिका [2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड—टू—बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

शोध सार

आज की दुनिया में, शिक्षा एक आवश्यकता है, और इसी कारण से, इसने भविष्य की योजनाओं में, विशेषकर युवाओं के लिए, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। शैक्षणिक प्रक्रिया के दौरान लोग विभिन्न प्रतिस्पर्धी बाजारों में कार्य करने में सक्षम होने के लिए आवश्यक कौशल और दक्षता हासिल करते हैं। शिक्षा का उच्च स्तर उच्च आय, अधिक प्रतिष्ठित करियर, बेरोजगारी का कम जोखिम और बेहतर कल्याण से जुडा है। शिक्षा भारत की नई पीढी को सामान्य तौर पर विकासशील व्यवस्था की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मानव का मानवीकरण करना तथा जीवन को प्रगतिशील एवं सुसंस्कृत बनाना है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपनी सोच और तर्क, समस्या समाधान और रचनात्मकता, बुद्धि और योग्यता, सकारात्मक भावना और कौशल, अच्छे मूल्य और दृष्टिकोण विकसित कर सकता है। किसी व्यक्ति की आकांक्षाओं का स्तर एक महत्वपूर्ण प्रेरक कारक है। यह संदर्भ का एक ढाँचा है जिसमें आत्म—सम्मान या वैकल्पिक रूप से अनुभव शामिल होता है जो विफलता या सफलता की भावना है। वर्तमान अध्ययन में, शोधार्थी ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध का पता लगाने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द— शैक्षिक आकांक्षाएँ एवं शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

शैक्षिक आकांक्षा एक व्यक्ति द्वारा अपने लिए निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों को दर्शाती है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्तियों को उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित और ऊर्जावान बनाती है। विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को बनाने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण चर है क्योंकि यह विद्यार्थियों को दुनिया के बारे में अधिक जानकार बनने में मदद करती है। वे इसके प्रति अपने संबंधों के प्रति संवेदनशील और समझदार हैं, और समुदाय में योगदान देने के लिए अधिक उत्सुक हैं। आकांक्षाएं बच्चे के जीवन में जल्दी ही आकार लेने लगती हैं, लेकिन अनुभव और पर्यावरण के कारण बदल जाती हैं। जैसे—जैसे बच्चे दुनिया के बारे में अपनी बढ़ती समझ और पिछले विकल्पों और उपलब्धियों द्वारा लगाई गई बाधाओं के कारण परिपक्व होते हैं, आकांक्षाएं कम होने लगती हैं। आकांक्षा का अर्थ है कुछ ऊँचा या महान हासिल करने की तीव्र इच्छा। हालाँकि, आकांक्षाएँ आमतौर पर किसी ऊँची या महान उपलब्धि नहीं हो सकतीं। ये वर्तमान और भविष्य दोनों दृष्टिकोणों को भी संबोधित करते हैं।

सिरिन, डायमर, जैक्सन और हॉवेल (2004) के अनुसार, 'आकांक्षाओं को शैक्षिक और व्यावसायिक सपनों के रूप में परिभाषित किया गया है जो विद्यार्थियों के भविष्य के लिए हैं।'

शैक्षिक उपलब्धि

विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में शैक्षिक उपलब्धि को एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है। यह छात्रों को कड़ी मेहनत करने और अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र में प्राथमिक चिंता का विषय बनी हुई है। स्कूल में उच्च शैक्षिक उपलब्धि आत्म—सम्मान और आत्मविश्वास का निर्माण करती है जिससे समूह के साथ बेहतर समायोजन होता है।

शैक्षिक आकांक्षाएँ

सभी व्यक्तियों की कुछ आकांक्षाएँ होती हैं। जीवन के सभी चरणों में लोग आत्म—उन्नति के लिए प्रयास करते हैं। विद्यार्थी काल की आकांक्षाएँ उनके व्यवहार को प्रभावित करती हैं। किसी व्यक्ति की आकांक्षाओं का स्तर एक महत्वपूर्ण प्रेरक कारक है।

शैक्षिक आकांक्षा के तीन समूह हैं—

- पृष्ठभूमि कारक,
- व्यक्तिगत कारक और
- पर्यावरणीय कारक।

पृष्ठभूमि कारकों में उम्र, लिंग, सामाजिक—आर्थिक स्थिति और पारिवारिक संरचना जैसी सामाजिक और जनसांख्यिकीय विशेषताएं शामिल हैं। व्यक्तिगत कारक प्रकृति में मनोवैज्ञानिक है और शिक्षा, स्कूल और काम के प्रति व्यक्ति के व्यक्तिगत दृष्टिकोण से बना है। पर्यावरणीय कारकों में माता—पिता की भागीदारी जैसे सामाजिक समर्थन के पहलू शामिल हैं, जो व्यक्ति को प्रभावित करते हैं।

बेन (2002) ने 12 देशों में पारस्परिक प्रभावों और शैक्षिक आकांक्षाओं पर एक अध्ययन किया और अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अपेक्षाकृत अविभाजित माध्यमिक शिक्षा वाले देशों में सहकर्मी और माता—पिता शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करते हैं, जबकि अधिक विभेदित माध्यमिक शिक्षा वाले देशों में शैक्षिक आकांक्षाओं का प्रभाव नगण्य है।

सेगिनर, राचेल और वर्मुल्स्ट (2003) ने दो सांस्कृतिक अर्थात् इजराइली अरब और इजराइली यहूदियों में शैक्षिक आकांक्षाओं और शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को देखने के लिए एक अध्ययन किया। यह पाया गया कि अप्रत्यक्ष पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक उपलब्धि पथ ने केवल अरब किशोरों के माध्यम से लिंग अन्तर दिखाया। लडकियों के लिए शैक्षिक आकांक्षाएँ और लडकों के लिए माता—पिता की माँगें और माता—पिता की माँगें सीधे तौर पर अरब लडकों और यहूदी किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित थीं।

राथॉन (2011) ने लंदन के वंचित क्षेत्र में शिक्षा की आकांक्षा और माध्यमिक शिक्षा की उपलब्धि के बीच सम्बन्धों की जांच की और पाया कि 16 साल की उम्र के बाद भी शिक्षा में बने रहने की इच्छा व्यक्त करने की संभावना लडकों की तुलना में लडकियों में अधिक थी, साथ ही जातीय मतभेद, सामाजिक—मनोवैज्ञानिक चर विशेष रूप से आत्म—सम्मान और उच्च शैक्षिक आकांक्षाओं से जुडा मनोवैज्ञानिक संकट भी थे।

अध्ययन का औचित्य

युवाओं के बीच शैक्षिक आकांक्षाओं का निर्माण और रखरखाव यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि और कैरियर की सफलता के लिए उच्च शैक्षिक आकांक्षाएं महत्वपूर्ण या आवश्यक हैं। शैक्षिक आकांक्षाओं का माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पडता है। जैसा कि माता—पिता अपने बच्चों को इन पुरस्कारों को परिभाषित करने में मदद करते हैं, और उनके समर्थन और प्रेरणा से, विद्यार्थियों को उच्च आकांक्षाएं निर्धारित करने की संभावना होती है। आकांक्षाएं सामाजिक और शैक्षणिक लक्ष्यों का एक समूह है जो छात्र, माता—पिता, शिक्षक या शिक्षा एजेंसियां छात्र प्राप्त करने के लिए स्थापित करती हैं—विशिष्ट वांछित शैक्षिक और कैरियर उपलब्धियाँ। छात्र, माता—पिता और शिक्षक किसी छात्र के लिए विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करने या प्रभावित करने के लिए सहयोग कर सकते हैं, लेकिन शैक्षिक आकांक्षाओं को स्थापित करने में उनकी अपनी इच्छा होती है। शिक्षा मानव जीवन का एक हिस्सा हैय यह पीछा करने वालों की मदद नहीं कर सकता जब तक कि उनके पास आवश्यक मात्रा में शैक्षिक आकांक्षाएं न हों। व्यक्तियों की आकांक्षाएँ होंगी, जीवन के सभी चरणों में लोग आत्म—वृद्धि के लिए प्रयास करते हैं। विद्यार्थी काल के दौरान आकांक्षाएँ उनके व्यवहार को प्रभावित करती हैं। किसी व्यक्ति की आकांक्षा का स्तर न केवल उसे उसी रूप में प्रदर्शित करता है जितना वह किसी विशेष क्षण में है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि वह भविष्य में भी उसी समस्या का सामना करना चाहेगा। जांचकर्ता ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्धों की खोज के लिए अध्ययन के लिए इस विषय को चुना है।

समस्या कथन—

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं
शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शोध में प्रयुक्त किए गए प्रमुख शब्दों की परिचलित परिभाषाएँ—

आकांक्षाएँ—

आकांक्षाएँ शब्द वह है जिसे अक्सर लक्ष्य, महत्वाकांक्षा, उद्देश्य, सपने, योजनाओं के पर्यायवाची के रूप में उपयोग किया जाता है आकांक्षाएँ ही हैं जो व्यक्तियों को वर्तमान की तुलना में अधिक और अधिक करने के लिए प्रेरित करती हैं। वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को अध्ययन हेतु चयनित किया है।

माध्यमिक विद्यालय—

प्राथमिक विद्यालय और कॉलेज के बीच मध्यवर्ती विद्यार्थियों के लिए एक विद्यालय, आमतौर पर ग्रेड 9 से 12 तक। वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी 9वीं और 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों को चयनित किया है।

उपलब्धि—

उपलब्धि परीक्षण का उपयोग अक्सर शैक्षिक प्रणाली में यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि एक छात्र किस स्तर की शिक्षा के लिए तैयार है। उच्च उपलब्धि स्कोर आमतौर पर ग्रेड—स्तरीय सामग्री की महारत और उन्नत निर्देश के लिए तत्परता का संकेत देते हैं। कम उपलब्धि स्कोर किसी पाठ्यक्रम ग्रेड को सुधारने या दोहराने की आवश्यकता का संकेत दे सकते हैं। वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने विद्यार्थियों की पिछली कक्षा का प्रतिशत चयनित किया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य—

1- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ—

वर्तमान अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं—

1- माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2- माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिसीमन—

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल मेरठ शहर तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
3. वर्तमान अध्ययन को केवल 100 विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
4. वर्तमान अध्ययन को माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित किया गया है।

प्रस्तुत शोध की योजना और प्रक्रिया—

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या—

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर, मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया है।

प्रस्तुत शोध का न्यादर्श एवं विधि—

वर्तमान अध्ययन हेतु स्तरीकृत न्यादर्श द्वारा 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रारूप—

प्रस्तुत शोध अध्ययन की कुल जनसंख्या (मेरठ शहर के विद्यालय) को दो स्तरों में विभाजित किया गया है सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय। विद्यालयों में एक सरकारी एवं एक गैर—सरकारी विद्यालय को चुना गया और 100 विद्यार्थियों को यादृच्छिक रूप से न्यादर्श के रूप में लिया गया।

आंकडे संग्रहण हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण—

आंकडे संग्रहण हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने डा० एम.ए०शाह एवं डा० महेश भार्गवन द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम को शोध अध्ययन हेतु चयनित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में उपयोग किए गए उपकरण का प्रशासन—

शोधार्थी ने मेरठ शहर के विद्यार्थियों से आंकड़ों का एकत्रण किया। आंकडे एकत्र करने के लिए, शोधार्थी ने विद्यार्थियों से सम्पर्क किया और डेटा एकत्र करने के उद्देश्य को समझाया, इससे पहले कि शोधार्थी को अच्छा समर्थन मिले, जो सटीक और सही परिणाम प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक था। शोधार्थी ने विद्यार्थियों का विश्वास जीतने के लिए उनके प्रति विश्वास का उपाय अपनाया। शोधार्थी ने निर्देशों को ध्यान से पढ़ा और निर्देशों को समझने में कोई कठिनाई होने पर तो परामर्श लेने के लिए निर्देशित किया।

प्रस्तुत शोध की सांख्यिकीय तकनीकें—

शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकीय तकनीकों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। वर्तमान अध्ययन में मीन, एस.डी., टी—टेस्ट के माध्यम से परिणामों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य—1

माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन।

परिकल्पना—1

माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 1.1

माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	14.82	1.95	4.32	सार्थक
छात्रायें	50	13.16	1.89		

'टी' मूल्य 4.32> तालिका मूल्य 1.96 (0.05 सार्थकता स्तर)

तालिका संख्या 1.1 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 14.82 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 13.16 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 4.32 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं की तुलना करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना (H^1_0) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

उद्देश्य—2

माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

परिकल्पना—2

माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 1.2

माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	22.28	3.82	**1.60**	**असार्थक**
छात्रायें	50	21.16	3.11		

'टी' मूल्य 1.60 < तालिका मूल्य 1.96 (0.05 सार्थकता स्तर)

तालिका संख्या 1.2 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में छात्रों का मध्यमान 22.28 है तथा छात्राओं का मध्यमान 21.16 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 1.60 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना (H^2_0) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है।

उद्देश्य—3

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

परिकल्पना—3

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

तालिका संख्या– 1.3

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

चर	संख्या	पीयरसन सहसम्बन्ध (r)	सार्थकता (2-tailed)
शैक्षिक आकांक्षा	100	0.71	0.36
शैक्षिक उपलब्धि			

तालिका संख्या 1.3 के बताती है कि छात्र—छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध महत्वपूर्ण है जैसा कि पियर्सन के 'आर' के द्वारा बताया गया है कि शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंक महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं। शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह—सम्बन्ध पाया गया है। अत: परिकल्पना 'माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।' अस्वीकर की जाती है।

अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना (H^3_0) 'माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

परिणामों के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि—

- माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आंकाक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सांख्यिकीय गणना के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कक्षा 10 के छात्र—छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षायें समान रूप में स्वीकृत की गयीं हैं।
- माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सांख्यिकीय गणना के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कक्षा 10 के छात्र—छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है।
- माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया गया। सांख्यिकीय गणना के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कक्षा 10 के छात्र—छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि एक—दूसरे के पूरक हैं।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- अग्निहोत्री, आर. (1987) 'आधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थाएँ और समाधान', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- अमित कुमार (2018) 'माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सांवेगिक परिपक्वता—एक अध्ययन' जरनल ऑफ एडवांसेज एण्ड स्कॉलरली रिसर्चेज इन एलाइड एजूकेशन, मल्टीडिसिप्लिनरी एकाडमिक रिसर्च, वाल्यूम—15, इश्यू—1, पृ०— 788-792.
- अनामिका राठौर एवं ज्योति गौतम (2020) 'माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन', श्रृंखला एक शोध परक वैचारिक पत्रिका, वाल्यूम—7, इश्यू—12, पृ०— 196-202
- अनूप बलूनी (2020) 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता एवं समायोजन का अध्ययन', इंटरनेशनल एजूकेशनल एप्लाइड रिसर्च जनरल, वाल्यूम—4, इश्यू—2, पृ०—56-64
- भानवेर (2012) 'किशोर बालक एवं बालिकाओं का लिंग की विभिन्नता के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन' जनरल आफॅ कम्यूनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च—27
- बी. श्रीलथा (2012) 'गुन्टूर जिले के छात्र—अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अध्ययन', इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, वाल्यूम—46, पृ०— 27–32
- गोखर, एस.सी. (2003) 'इमोशनल मैच्योरिटी ऑफ स्टूडेन्ट्स एट सैकेण्डरी स्टेज सैल्फ कॉन्सेप्ट एण्ड एकाडमिक अचीवमेंट', जरनल ऑफ इण्डियन एजूकेशन, वाल्यूम—1 XXIX, इश्यू—3, पृ०—227–232